वर्ष 18 अंक 04
27 सितम्बर 2020
एम.पी.एच.आई.एन. 2003 12367
पोस्ट दिनांक 30 सितम्बर 2020

ओ३म्

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल 32/2018-20
पृष्ठ संख्या 28
एक प्रति 20.00 रु.

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है ..

वैदिक रवि

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रमुख पत्र

गुरुकुल विशेषांक

※ एक दृष्टि में आर्य समाज ※

- आर्य समाज की मान्यता का आधार सत्य सनातन वैदिक धर्म है।
- सनातन वह है जो सदा से था, सदा रहेगा। सत्य सनातन धर्म का आधार वेद है।
- वेद ज्ञान का मूल परमात्मा है।
- यही सृष्टि के प्रारंभ का सबसे पहला ज्ञान, पहली संस्कृति और समस्त सत्य विद्याओं से पूर्ण है।
- वेद ज्ञान किसी जाति, वर्ण, सम्प्रदाय या किसी महापुरुष के ज्ञान के अनुसार नहीं है और न ही किसी समय व स्थान की सीमा में बन्धा है।
- परमात्मा की कल्याणी वाणी वेद समस्त प्राणियों के लिए और सदा के लिए हैं।
- इसे पढ़ना-पढ़ाना श्रेष्ठ (आर्य) जनों का परम धर्म है।
- ईश्वर को सभी मानते हैं इसलिए विश्व शान्ति इसी ईश्वरीय ज्ञान वेद से संभव है।
- आर्य समाज-अविद्या, कुरीतियों, पाखण्ड व जाति प्रथा जैसी सामाजिक बुराईयों को दूर करने वाला तथा सत्य ज्ञान व सनातन संस्कृति का प्रचारक है।

ओ३म्

वैदिक रवि मासिक

वर्ष 18 अंक–04

27 सितम्बर 2020

(सार्वदेशिक धर्मार्थ सभा के निर्णयानुसार)

सृष्टि सम्बत् 1,96,08,53,119

विक्रम संवत् 2077

दयानन्दाब्द 194

सलाहकार मण्डल

राजेन्द्र व्यास

पं. रामलाल शास्त्री 'विद्याभास्कर'

डॉ. रामलाल प्रजापति

वरिष्ठ पत्रकार

प्रधान सम्पादक

श्री इन्द्रप्रकाश गाँधी

कार्या. फोन : 0755–4220549

सम्पादक

प्रकाश आर्य

फोन : 07324–226566

सह सम्पादक

श्रीमती डॉ. राकेश शर्मा

सदस्यता

एक प्रति – 20,00 रू.

वार्षिक – 200,00 रू.

आजीवन – 1000,00 रू.

विज्ञापन की दरें

आवरण पृष्ठ 2 एवं 3 .... 500 रू.

पूर्ण पृष्ठ (अन्दर) .... 400 रू.

आधा पृष्ठ (अन्दर का) .... 250 रू.

चौथाई पृष्ठ .... 150 रू.

अनुक्रमणिका

- संपादकीय – अनियंत्रित दशा और दिशा 2
- कविता – सोते रहे 4
- स्वामी दयानन्द 6
- व्यक्तित्व विकास 7
- कविता – सर्वपितृ मनुष्याणां ... 8
- धर्म कहता है ... 9
- जीवन पवित्रता व धर्म ... 10
- बोधकथा – सकारात्मक दृष्टिकोण 12
- वेदों की दृष्टि में धर्म 13
- महर्षि दयानन्द आर्ष कन्या... 15
- शुभकामना संदेश
- शुभकामना संदेश
- गुरुकुल के समाचार

सम्पादकीय :

अनियन्त्रित दिशा और दशा

आज के पहले नियन्त्रण शब्द की गंभीरता पर कभी गहराई से विचार नहीं किया था। न जाने कैसे इस पर वैचारिक सूई आकर ठहर गई और वैचारिक मंथन प्रारंभ हो गया। सोचने पर पर लगा यह एक शब्द ही इतना बड़ा कारण है जिसके आस पास सारी दुनिया है और सारी दुनिया इससे प्रभावित हो रही है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता है यह सार्वभौमिक है, सार्वकालिक है, सदा के लिए है, सबसे के लिये है। इसकी प्रासंगिकता व्यक्ति से लेकर विश्व तक है, छोटे से निर्माण से लेकर जल, थल, नभ तक है।

नियन्त्रित प्रत्येक वस्तु प्रत्येक विचार, प्रत्येक व्यक्ति लाभप्रद होता है। अनियन्त्रित कोई भी बात कोई भी कार्य, कोई भी वस्तु हानिकारक होती है। आज चहुंओर अनियन्त्रित दृश्य व परिवेश दृष्टिगोचर हो रहे हैं।

नियन्त्रण का भाव – संयम से समझ सकते हैं संयम और सरल करें तो उसे सीमा या मर्यादा से समझा जा सकता है। अब इस लेख का लिखने का उद्देश्य पाठकवृन्द के समक्ष कुछ स्पष्ट हो चुका है ऐसा मैं मानता हूँ।

संसार के प्रत्येक मनुष्य के लिये नियन्त्रण का कितना महत्व है, इस पर थोड़ा विचार करते हैं। जीवन का एक महत्वपूर्ण सूत्र जो आपकी जिन्दगी आबाद कर सकता है और उसकी उपेक्षा से बरबाद हो सकता है वह शब्द है नियन्त्रण। एक व्यवहार आपको सुख, शान्ति, आनन्द की अनुभूति दे सकता है वही न होने पर आपके दुःख अशान्ति का कारण भी बन सकता है।

जैसे बहुत आरामदायक सर्व सुविधा युक्त बहुत तेज गति वाला वाहन आपकी यात्रा सफल बनाते हुए समय की बचत और शारीरिक सुख प्रदान कर सकता है। किन्तु यह तभी संभव है जब उस पर नियन्त्रण करने की कोई व्यवस्था हो। यदि वाहन नियन्त्रण में चलता रहे तो उसका लाभ है अनियन्त्रित वाहन जीवन भी नष्ट कर सकता है। कितना भी कीमती वाहन हो उसका महत्व गति पर नियन्त्रण व्यवस्था से ही है।

समुद्र जीवन दाता है, बादलों को पानी देता है, बादल वर्षा कर प्राणीमात्र को जीवन देता है। पानी से ही वन, वनस्पति, अन्न सबकुछ है इसलिये समुद्र प्राण का बड़ा आधार है। अनेक व्यक्ति समुद्र की इसी महानता के कारण उसकी पूजा करते हैं, हाथ जोड़ते हैं, उसके प्रति पवित्र आदरभाव रखते हैं।

समुद्र में अथाह जल है परन्तु नियन्त्रित है। अनेक शहर समुद्र के मध्य बसे हुए है किन्तु समुद्र से कोई खतरा उन्हें नहीं होता। किन्तु जब वही समुद्र अनियन्त्रित हो जाता है तो सुनामी का रूप लेकर काल बनकर सबकुछ तबाह कर देता है।

अग्नि जीवन है बिना अग्नि के जीवन व जीवन की आवश्यकताओं की कल्पना भी करना व्यर्थ है। प्रत्येक प्राणी के भीतर अग्नि तत्व है कम हो जावे तो और बढ़ जावे तो वह हानिकारक है। नियन्त्रित तत्व ही जीवन रक्षक व लाभदायक है।

नियन्त्रित अग्नि से हवन होता है, भोजन बनता है, वस्तुओं का निर्माण होता है किन्तु वही अग्नि अनियन्त्रित होकर भयंकर आग के रूप में परिवर्तित हो जावे तो ?

चारों ओर तबाही मचा देती है। प्राणीमात्र का नदियां जीवन है। परन्तु अनियन्त्रित हो जाने पर भयंकर बाढ़ का रूप धारण कर लेती है लाखों व्यक्ति बेघर बार हो जाते हैं, पानी में बहकर उनका जीवन अन्त हो जाता है। इसी प्रकार यह मनुष्य जीवन भी, इसे यदि नियन्त्रित रखा तो यह अनेक आपदाओं से, परेशानियों से, क्लेशों से, भय से, शारीरिक व मानसिक बीमारियों से मुक्त रहेगा। हमारे शास्त्रों में विद्वान, पूर्वजों ने इन सब पर गहन विचार उपदेश के रूप में हमें दिये हैं।

किन्तु समाज आज उनकी उपेक्षा कर सारी सीमायें तोड़ते हुए अनियन्त्रित हो रहा है। हम क्या खाते हैं, कितना खाते हैं, कब खाते हैं इसकी कोई सीमा नहीं।

धन सम्पत्ती एकत्रित करने की कोई सीमा नहीं। फिर इसके लिये प्रयास के लिए सोने, जागने, खाने पीने की सब स्थिति अनियन्त्रित हो जावेगी। इन सबके भावी परिणाम कि चिन्ता किए बिना पूरी दिनचर्या अस्त व्यस्त हो जावेगी।

इसलिये, उपदेश दिया अरिग्रह का, उपदेश दिया सन्तोष धन का, उपदेश दिया जितेन्द्रिय बनने का, अनियन्त्रित जीवन बन्धनों में उलझा देता है, वहीं नियन्त्रित, संयमित जीवन सुगमता, सरलता, सफलता प्रदान करता है।

किसी ने ठीक लिखा – हमको मन की शक्ति देना, मन विजय करें। दूसरों की जय से पहले, खुद को जय करें। ये मन बड़ा चंचल है, जीवन को यही नियन्त्रित या अनियन्त्रित करता है। कठोपनिषद में इसे – **"आत्मानां रथिनं विद्धि शरीर रथ मेवतू, बुद्धिंतू सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहं मेवच।।"**

अर्थात् – आत्मा यात्री, शरीर वाहन, बुद्धि चालक और मन नियन्त्रण करने वाली लगाम है। इस मन को नियन्त्रित कर लिया तो जीवन मुक्ति और नहीं किया तो बन्धन में डाल देगा। योगीराज श्री कृष्णजी के अनुसार – **मनएव मनुष्याणां कारणं बन्ध मोक्षयो।**

इसलिए अनियन्त्रित विचार, इच्छायें, सग्रह प्रवृत्ती से आज व्यक्ति से लेकर सम्पूर्ण विश्व दुःख, चिन्ता, भय की आग में जल रहा है।

नियन्त्रण ही सामाजिक संविधान है, नियन्त्रण ही धर्म का सन्देश है। यदि मानव समाज इस सूत्र को समझ ले इसे अपना ले तो व्यक्ति से लेकर विश्व तक की समस्यायें समाप्त हो जावें।

सोते रहे गर यूं ही तो, गुलिश्ता फिर उजड़ जायेगा

सोते रहे गर यूं ही तो, गुलिश्ता फिर उजड़ जायेगा।
कली खिलने से पहले ही, पतझड़ कहर ढायेगा।

रहनुमा बने हुए है जो, आज वतन के,
वे ही दुश्मन बने हैं, इस चमन के।

माली के हाथ से डाल पर, कैंची चल रही है।
हम समझ ही न पाये, कौन गलत, कौन सही है।।

डर है काला अतीत इस गफलत से, फिर दोहराएगा,
सोते रहे यूं ही तो, गुलिश्ता फिर उजड़ जायेगा।।1।।

सींचने का बहाना कर जो, मठ्ठा जड़ में डाल रहे,
ऐसे जहरीले नागों को, अपने ही घर में पाल रहे।

आक्रमण हो रहा संस्कृति पर, भंवर में उलझी नांव है,
कहां कहां लगावे मरहम, पूरे जिस्म पर तो घाव है।

अभी भी वक्त है, सभंल गए तो, वतन बच जायेगा,
सोते रहे गर यूंही तो, गुलिश्ता फिर उजड़ जाएगा।।2।।

माली गद्दार विश्वास घाती, और बहरूपिये हैं,
विश्वास में ही विष के काण्ड, हजारों किए हैं।

पर यहां तो अफीम से भी गहरा नशा है,
राष्ट्र प्रेम बस, नारों में ही बसा है।

हम स्वार्थी बन मन में सोच रहे, जो हो रहा होने दो,
उजड़ जाए चमन, हमे तो बस सोने दो।

पर ध्यान रख ये आशिंया ही जल गया, तो तू भी नहीं बच पायेगा,
सोते रहे गर यूंही तो, गुलिश्ता फिर उजड़ जायेगा।।3।।

स्वार्थ की मदिरा पीकर, ओ जिन्दा रहने वालों,
भूलकर अतीत पर, जरा नजर तो डालो।

जिनकी बदौलत आज आजाद कहलाते हो,
जय–जय कार से मन सबका बहलाते हो।

उन शहीदी परिवारों से पूछों, चमन कैसे सींचा था,
शहादत देकर भी, चेहरे पर तनाव न, दीखा था।

वह शहादत पुकार रही आज, लाज कौन बचायेगा,
राखी, मांग और सूनी गोद का, कर्ज कौन चुकायेगा।

तुम्हारी कृतघ्नता के गीत, भविष्य चीख–चीख कर सुनाएगा,
सोते रहे गर यूंही तो, गुलिश्ता फिर उजड़ जायेगा।।4।।

डाल काट रहे वही, जिस पर तुम खुद बैठे हो,
अर्तनाद करती माता, कैसे उसके बेटे हो।

कर्तव्य विमुख बन गए क्यों, उष्णता रक्त में क्यों नहीं आती,
लुटते रहे खुद अपने हाथों, इसका इतिहास है साक्षी।

किन्तु वक्त पुरूषार्थ से फिर बदल जायेगा,
सूखे इस उपवन में फिर से, वही बहार लायेगा।

राणा प्रताप शिवा भगत सुभाष की ये माटी है,
जिनके त्याग, तपस्या, शौर्यता की, दुनिया गुण गाती है।

बस एकबार जाति, ऊँच नींच के सारे भेद आपस के मिटा दो,
होकर खड़े अपनी संस्कृति और शौर्यता का परचम लहरा दो।

गर भूल गए कर्तव्यों को, तो भविष्य दुर्गम हो जाएगा।
सोते रहे यूंही तो, गुलिश्ता फिर उजड़ जायेगा।।

रचना – **प्रकाश आर्य, महू**

"संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।"

– महर्षि दयानन्द सरस्वती

पानी की एक–एक बून्द कीमती है, इसे व्यर्थ न बहाएं।

– जनहित में प्रसारित

स्वामी दयानन्द

धर्म : जिसका स्वरूप ईश्वर की आज्ञा का यथावत् पालन और पक्षपात रहित न्याय सर्वहित करना है, जो कि प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सुपरिक्षित और वेदोक्त होने से सब मनुष्यों के लिए यही एक मानने योग्य है, उसे धर्म कहते हैं।

स्वर्ग : जो विशेष सुख और सुख की सामग्री को जीव का प्राप्त होना है, वह स्वर्ग कहलाता है।

नरक : जो विशेष दुःख और दुःख की सामग्री को जीव का प्राप्त होना है, वह नरक कहलाता है।

अभयं मित्रादभयममित्रादमयं ज्ञातादभयं परोक्षात्।

अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु।।

अर्थात् : हे सर्व भयहर्ता परमात्मन्। मित्र से हमें अभय (अर्थात् भय से अन्य फल) शत्रु से अभय ज्ञात शत्रु तथा अज्ञात् शत्रु से अभय हो, रात्रि तथा दिन में अभय हो। सब दिशाएँ हमारे लिये हितकारिणी होवें।

स्वास्थ के लिए थोड़ा हँसिए भी ...

संतासिंह और बंतासिंह दोनों बहुत बड़े दुश्मन थे। ये दोनों एक ही बिल्डिंग में रहते थे। बंतासिंह सातवें माले पर रहता था और संतासिंह पहले। एक बार बिल्डिंग की लिफ्ट खराब हो गई। बंतासिंह ने सोचा कि आज संतासिंह को सबक सिखाया जाए। उसने संतासिंह को फोन करके खाने पर बुलाया। बेचारा संतासिंह जैसे तैसे सातवें माले पर पहुंचा और वहां जाकर देखा कि दरवाजे पर ताला लगा है और लिखा था कि कैसा उल्लू बनाया। संतासिंह को यह देखकर बहुत गुस्सा आया। उसने उस नोट के नीचे लिखा ''मैं तो यहां आया ही नहीं था''

एक सरदार जी एक 25 मंजिला भवन की छत पर बैठे थे, तभी एक आदमी हांफता हुआ आया और कहने लगा कि संतासिंह आपकी पोती मर गई। सरदारजी ये खबर सुनकर बहुत हताश हो जाते हैं और बिल्डिंग से कूद पड़ते हैं। जब वो 20 वीं मंजिल तक पहुंचते हैं तो उन्हें ख्याल आता है कि उनकी तो कोई पोती ही नहीं है। 10 मंजिल आने पर ध्यान आता है कि उनकी तो शादी ही नहीं हुई है और जैसे ही जमीन पर गिरने वाले होते हैं कि ख्याल आता है कि उनका नाम तो संतासिंह है ही नहीं।

व्यक्तित्व विकास

1. उत्तरदायित्व को वहन करना :

जब व्यक्ति किसी कार्य को करने की जिम्मेदारी लेता है तो समझो उसकी उन्नति का मार्ग प्रशस्त हो गया। जो लोग स्वयं जिम्मेदारी या उत्तरदायित्व लेने में आनाकानी करते हैं वे केवल दूसरों को दोष देने तक ही सीमित रह जाते हैं। जिम्मेदारी और स्वतन्त्रता हाथ में हाथ डाले चलती है। किसी समाज का पतन चोर उचक्कों से इतना नहीं होता जितना अच्छे लोगों द्वारा दायित्व न लेकर निठल्ले बैठे रहने से होता है। जब अच्छे लोग निष्क्रिय होकर बैठ जाएँ तो बुराई को पनपने का अवसर मिल जाता है।

2. दूसरों की बातों को ध्यान से सुनना :

यदि आप चाहते हैं कि दूसरे लोग आपकी बात को ध्यान से सुने तो आपको भी दूसरों की बातों को ध्यान से सुनना चाहिए, इससे दूसरा व्यक्ति अपने आपको महत्वपूर्ण समझने लगता है और फिर वह आपकी बात को भी ध्यान से सुनता है। अच्छा श्रोता बनने के लिए दूसरे व्यक्तियों को उनकी बात कहने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। उनसे प्रश्न पूछें। बीच में बाधा न डालें। कहने वाले के अभिप्राय को समझने का प्रयत्न करें।

3. उत्साह :

उत्साह के बिना कोई बड़ा काम पूरा नहीं होता। उत्साह और सफलता साथ साथ चलते हैं। उत्साह से आत्मविश्वास बढ़ता है। जिन्दगी जिन्दादिली का नाम है। उत्साह और किसी कार्य को करने की इच्छा व्यक्ति को सफलता के चरम शिखर पर ले जाती है। उत्साह से आत्मबल बढ़ता है। उत्साह एक प्रकार की आदत है जिसे उत्साही पुरूषों के संग से सीखा जा सकता है।

4. प्रतिज्ञा पूरी करना :

जैसी हानि प्रतिज्ञा भंग करने वाली की होती है वैसी दूसरों की नहीं। जिससे जैसी प्रतिज्ञा की हो उसे पूरा करने का भरसक प्रयत्न करना चाहिए। प्राण जाए पर वचन न जाई। कार्य वा साधयेयं देहं वा पातयेयम्। किसी काम को पूरा करने की प्रतिज्ञा कर लेने पर हर स्थिति में उसे पूरा करना सुदृढ़ व्यक्तित्व की पहचान है। अपने वचन को निभाने वाले का सब विश्वास करते हैं।

क्रमशः ...

सर्वपितृ मनुष्याणां वेदाश्चक्षु सनातनम्

जब–जब बड़ों की सीख हमने नहीं मानी।
तब–तब सदा उठाना पड़ी है हमें हानी।।

समय चक्र घूमकर उस बिन्दू के सामने आता है।
पूरा चक्र लगाने के पूर्व जहां से वह जाता है।।

इतिहास भूलों से बिखरता और सजगता से संवरता है।
इसे मापदण्ड मानकर चलते जो उन्हें धोखा नहीं होता है।।

इसलिए स्वर्णिम इतिहास हो, या सुलझे विचार।
दोनों को ही बनाएं सीख का आधार।।

बड़े बूढ़े ऋषि–मुनियों ने हमें यही समझाया।
नहीं दूजा वेद ज्ञान सा, जग में, यह बतलाया।।

क्योंकि वेद सनातन है, पूर्ण और है पवित्र।
ज्ञान भी उसका जो है यत्र–तत्र–सर्वत्र।।

अमृत कलश से भरा है यह वेद ज्ञान।
योगेश्वर कृष्ण और मानते थे श्रीराम।।

पर, हमने जीने का ढ़ंग कुछ और अपनाया है।
प्राचीन संस्कृति और सीख को जिसमें भुलाया है।।

भौतिक सुख–शान्ति के वातावरण में।
आधार शून्य बाहरी आवरण में।।

जिसे नवीनता की निशानी मान रहे।
मानो अमृत छोड़ गरल पान पा रहे।।

आज मनुष्यता बिखरते जा रही।
दुनियां सिमिटती जा रही।।

पर हम हैं कि पाश्चात्य और पशु सभ्यता में ही लिप्त हैं।
बाहरी सुखों से ही बस तृप्त हैं।।

परन्तु, अज्ञान से भरी ये मानसिकता दुःख की निशानी है।
दुःख भोगना होगा, यदि कीमत अतीत की न जानी है।।

इसलिए अभी भी वक्त है संभल जाओ।
क्योंकि, अतीत और वर्तमान में दूरी न बढ़ाओ।।

जब–जब बड़ों की सीख हमने नहीं मानी।
तब–तब सदा उठाना पड़ी है हमें हानी।।

इसीलिए धर्म शास्त्र प्रणेता मनु ने समझाया।
"सर्वपितृ मनुष्याणां वेदाश्चक्षु सनातनम्" बतलाया।।

– प्रकाश आर्य, महू

धर्म कहता है – क्रोध मत करो

– मेजर रत्नसिंह यादव (सेवानिवृत्त) जखाला

संसार के कुछ महान विचारकों ने हमारे लिए विचारों के माती चुनकर सुरक्षित रख छोड़े हैं। हमारी बुद्धिमत्ता इसी में है कि मोतियों की इस माला से अपनी तथा दूसरों की शोभा बढ़ायें। हमारे शास्त्रों में भी षट्शत्रुओं में क्रोध को दूसरा शत्रु माना गया है। आइये जानें कि इस शत्रु के विषय में विभिन्न विचारकों ने क्या कहा है –

1. क्रोध क्षणिक पागलपन है।
2. कोई भी व्यक्ति क्रोधित हो सकता है यह बहुत आसान है। परन्तु उचित व्यक्ति के साथ, उचित मात्रा में, उचित समय पर, उचित कारण से तथा उचित प्रकार से क्रोधित होना सबके बस का नहीं है और यह आसान नहीं है। (यूनानी दार्शनिक अरस्तु)
3. अपने क्रोध पर नियन्त्रण करो, नहीं तो यह आप पर नियन्त्रण कर लेगा। (Horac Epistles)
4. आप उस व्यक्ति पर क्रोधित क्यों हो रहे हो, जो आप पर क्रोध कर रहा है ? इस क्रोध से आप को क्या मिलने वाला है ? आपका शारीरिक क्रोध आपकी विचार शक्ति भंग करेगा। यह कैसे हो सकता है कि आपके घर में लगी आग आपका घर जलाने से पहले दूसरे का घर जला दे। (Basvanand)
5. क्रोध बुद्धि के दीपक को बुझा देता है।
6. क्रोध प्रेम को विलीन कर देता है। अतः मनुष्य को क्रोध के स्थान पर क्षमा को धारण करना चाहिए। (Samana Suttam)
7. गम्भीर तथा गहन प्रश्नों की परीक्षा में प्रत्येक को शान्त, स्थिर चित्त तथा धीरे बोलना चाहिए। (Ingersole)
8. उबलते जल में हम अपनी परछाई नहीं देख सकते, इसी प्रकार क्रोध की अवस्था में सत्य नहीं देखा जा सकता।
9. यदि छोटी छोटी बातें आपको क्रोधित कर सकती हैं तो क्या ये आपके छोटे कद की ओर संकेत नहीं कर रही ? (Sydaney Harris)
10. आपके लिए यह सम्भव नहीं है कि एक ही समय में आप क्रोध करें या हंसे। परन्तु दोनों में से किसी एक को चुनना आपके लिए सम्भव है।
11. क्रोध का भोजन विवेक है। (Wayne Dyer)

प्रबोध चन्द्रोदय नामक संस्कृत कवि श्री कृष्ण मित्र ने क्रोध की विशिष्टता बताई है।

अन्धीकरोमि भुवनं बधिरीकरोमि, धीरं सचेतनमचेमनतां नयामि।
कृत्यं न पश्यति न येन हितं श्रृणोति धीमानधीतममि न प्रतिसन्दधाति।

क्रोध अपना गुण बताता है –

जब मैं किसी व्यक्ति के पास जाता हूँ तो संसार को अन्धा और बहरा कर देता हूँ। धीर और चेतनावान् व्यक्ति को भी मैं चेतना रहित कर दिया करता हूँ। मेरे आने पर व्यक्ति अपने कर्तव्य को भूल जाता है और अपने हित की बात भी नहीं सुन पाता। जब मैं उपस्थित होता हूँ तो बुद्धिमान व्यक्ति अपने पठित ज्ञान को भी धारण नहीं कर पाता।

अतः व्यक्ति को चाहिये कि **'कोधनृतेवर्जय'** कोध और झूठ को सर्वथा त्याग दे, इसी में अपना और दूसरों का कल्याण है।

– साभार **सुधारक**

जीवन पवित्रता व धर्म का एक अंग दान भी है...

दान की महिमा

वैसे तो विद्या का दान करना श्रेष्ठ कहलाता है परन्तु विद्या प्राप्ति में विशेष सहायक अन्न का दान करना उससे भी उत्तम है। क्योंकि भूखे पेट रहकर विद्या प्राप्ति करना भी कठिन है।

अन्न के उपयोग से शरीर में शक्ति का संचार होता है, शरीर में शक्ति रहेगी तो बुद्धि भी ज्ञान ग्रहण में समर्थ हो सकती है इसीलिए संस्कृत साहित्य में अन्न की महत्ता दिखाते हुए कहा है –

अन्न वै प्राणः, अन्नं बहुकुर्वी, अन्नं न निन्द्यात्। अन्न ही निश्चय से प्राणों का आधार है अतः अन्न की उत्पत्ति अधिक मात्रा में करनी चाहिए। अन्न की निन्दा नहीं करना चाहिए।

आजकल विवाह, जन्मोत्सव तथा इसी प्रकार के सार्वजनिक भोजों में अन्न का बहुत दुरूपयोग होता देखा गया है। लोग जिह्वा के वशीभूत होकर अधिक अधिक खाद्य पदार्थ ले लेते हैं, पेट में स्थान रहता नहीं ऐसी अवस्था में झूठा भोजन कूड़ेदान में डाल देते हैं। उन्हें सोचना चाहिए कि निमन्त्रणदाता व्यक्ति ने कितना धन व्यय करके आपके लिए सभी प्रकार के रसों से युक्त विविध व्यंजन बनवाये हैं और आप

गुरुकुल में केबीनेट मंत्री सुश्री उषा जी ठाकुर का आगमन

सुश्री ऊषा जी ठाकुर 12 सितम्बर 2020 को महर्षि दयानन्द आर्ष कन्या गुरूकुल, मोहन बड़ोदिया पहुंची, वहां गुरूकुल परिवार में उनका स्वागत किया। जहॉ उन्होंने गुरूकुल परिसर का अवलोकन किया। गुरूकुल की कन्याओं द्वारा मन्त्रपाठ सुनकर वे अत्यन्त प्रभावित हुई और अपने उद्बोधन में कहा संस्कृति को बचाने के लिए ऐसे गुरूकुल की आवश्यकता है। ऐसे कार्य गुरूकुल, संस्थाऐं मेरे विचारों के अनुकूल हैं।

संक्षिप्त जानकारी पर गुरूकुल के कार्यकर्ता वहॉ उपस्थित हुए और कार्यक्रम एक गोष्ठी के रूप में सम्पन्न हुआ, जिसका संचालन डॉ. ललित नागर ने किया। कार्यक्रम में श्री वेदप्रकाश आर्य, श्री दरबारसिंह आर्य, श्री काशीरामजी, श्री हरिसिंह आर्य सरपंच, श्री चैनसिंह आर्य, श्री शान्तिलाल कारपेन्टर, श्री नारायणसिंह आर्य, श्री शंकर सिंह आर्य, श्री दुर्गाप्रसाद आर्य, श्री सिद्धनाथसिंह, राधेश्याम आर्य एवं श्री दक्षदेव गौड़, श्री मनोज सोनी, श्री ओमप्रकाश आर्य, श्री रवि आर्य, श्री अश्विनी आर्य, श्री श्रीधर गोस्वामी आदि ने पुष्प माला एवं शॉल श्रीफल से सुश्री ऊषाजी का स्वागत किया।

अपने उद्बोधन में सुश्री ऊषा जी ठाकुर ने गुरूकुल में बार–बार आने का जिक्र किया तथा निर्माणाधीन और भविष्य में होने वाले धर्म कक्ष के निर्माण में सहयोग देने का आश्वासन भी दिया।

इस अवसर पर गुरूकुल की आचार्या सुश्री प्रज्ञा विद्यालंकार, सुश्री सुचिता शास्त्री, सुश्री राधा शास्त्री ने भी मन्त्रपाठ कर स्वागत किया।

सुरेशचन्द्र आर्य
प्रधान - सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

शुभकामना संदेश

यह जानकर अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि ग्राम मोहन बड़ोदिया, जिला शाजापुर (म.प्र.) में स्थापित महर्षि दयानन्द आर्ष कन्या गुरूकुल की स्थापना को एक वर्ष पूर्ण हो रहा है। दिनांक 27 सितम्बर 2020 को आयोजित प्रथम स्थापना वर्ष के शुभ अवसर पर मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाऐं भेजते हुए अत्यन्त गर्व का अनुभव कर रहा हूँ। मध्यप्रदेश की पावन धरा पर यह प्रथम आर्ष कन्या गुरूकुल है जिसकी अत्यधिक आवश्यकता थी और जिसे सभी का भरपूर समर्थन और आशीर्वाद प्राप्त हो रहा है।

मनव मात्र का कल्याण करने वाले सत्य सनातन वैदिक ज्ञान के निरन्तर लुप्त होते रहने के कारण ही आज सारा संसार दुःखी हैं विश्व में सुख और शान्ति की स्थापना के उद्देश्य से ही ऋषिवर देव दयानन्द ने "वेदों की ओर लोटों" का नारा दिया था। भौतिक उन्नति की चकाचौंध में वर्तमान शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों और चरित्र निर्माण का स्थान बहुत पीछे छूट चुका है। ऐसी विषम परिस्थिति में भारत की प्राचीन वैदिक संस्कृति यदि आज थोड़ी बहुत जीवित है तो वह केवल गुरूकुलों के कारण ही जीवित है। इसलिये गुरूकुलों का संरक्षण और संवर्धन अत्यन्त आवश्यक है।

मुझे बड़ी खुशी है कि श्री प्रकाशजी आर्य और उनकी टीम के सतत् प्रयासों और दृढ़ संकल्प के आधार पर ग्राम मोहन बड़ोदिया में आर्ष कन्या गुरूकुल तेजी से वृहद रूप प्राप्त कर रहा है। हर अच्छे कार्य में ईश्वर की कृपा अवश्य प्राप्त होती है। आचार्या नन्दिता जी शास्त्री के मार्गदर्शन में यह गुरूकुल निश्चित रूप से नये कीर्तिमान स्थापित करेगा ऐसा पूर्ण विश्वास है। एक वर्ष में ही छात्राओं की संख्या में आशातीत वृद्धि से मन अत्यन्त प्रफुल्लित और गर्वित हो रहा है।

मैं इस अवसर पर रू. 2,51,000 (दो लाख इक्यावन हजार) के व्यक्तिगत सहयोग की घोषणा करते हुए महर्षि दयानन्द आर्ष कन्या गुरूकुल, मोहन बड़ोदिया के सर्वांगीण विकास हेतु अपनी शुभकामनाऐं अर्पित करता हूँ।

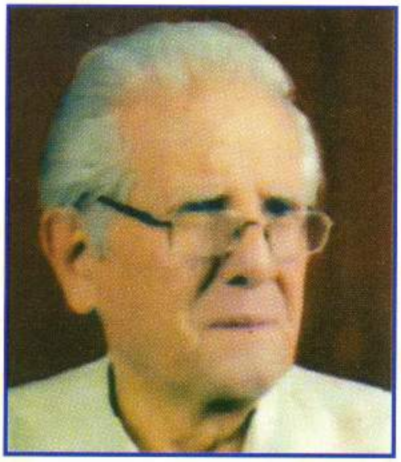

इन्द्रप्रकाश गाँधी
प्रधान - मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल

शुभकामना संदेश

अपरिहार्य कारणों से मैं कार्यक्रम में उपस्थित नहीं हो पा रहा हूँ। मुझे इसका अफसोस है। कार्यक्रम तो गरिमामय और सफल होगा ही मुझे पूर्ण विश्वास है।

क्योंकि वहां गुरुकुल के लिए निरंतर कार्यरत एक सशक्त टीम है। फिर भी मैं अपनी ओर से सभी कार्यकर्ताओं को हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ। आयोजन की सफलता की कामना करता हूँ। ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि पवित्र वैदिक ज्ञान के प्रचार प्रसार में यह गुरुकुल अपनी कीर्ति प्राप्त करें। यहां से शिक्षा प्राप्त करने वाली प्रत्येक कन्या सनातन धर्मी बन कर जीवन में उन्नति करें। इत्योम्!

महर्षि दयानन्द आर्ष कन्या गुरुकुल का प्रथम स्थापना दिवस सम्पन्न

महर्षि दयानन्द आर्ष कन्या गुरूकुल मोहन बड़ोदिया का प्रारंभ विगत वर्ष 15 सितम्बर 2019 को हुआ था,एक वर्ष पूर्ण होने पर 27 सितम्बर 2020 को प्रथम स्थापना दिवस मनाया गया।

कार्यक्रम में पाणिनी कन्या गुरूकुल महाविद्यालय, वाराणसी की प्रमुख संचालिका चतुर्वेदा नन्दिता जी शास्त्री वाराणसी से पधारी थी, दिल्ली से श्री ज्ञानेन्द्र सिंह अवाना भी सम्मिलित हुए। सर्वप्रथम कार्यक्रम में 13 नवीन प्रवेश कन्याओं को जिन्होंने इस वर्ष प्रवेश लिया है, उनका यज्ञोपवीत संस्कार सम्पन्न करवाया। यज्ञोपवीत संस्कार आचार्या नन्दिता जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। इसके पश्चात ओ3म् ध्वजारोहण हुआ। गुरूकुल की छात्राओं ने ध्वजगान प्रस्तुत किया। मुख्य मंच पर कार्यक्रम प्रारंभ हुआ, इसका बहुत ही सराहनीय और कुशलतापूर्वक संचालन डॉ. ललित नागर उज्जैन ने किया, सहयोगी श्री दरबारसिंह आर्य थे। अतिथियों का स्वागत गुरूकुल द्वारा और अन्य आर्यजनों के माध्यम से किया गया।

अथितियों का स्वागत वेदप्रकाश आर्य, अरुण आर्य, दक्षदेव गौड़, दरबार सिंह आर्य, श्री अतुल वर्मा, शांतिलाल कारपेन्टर, चैन सिंह आदि आर्य जनों ने किया। अतिथि स्वागत के पश्चात गुरुकुल की कन्याओं ने स्वागत गीत की प्रस्तुति की। भक्तिभाव और महर्षि दयानन्द पर भजन भी प्रस्तुत किये।

इस अवसर पर गुरूकुल की आचार्या सुश्री प्रज्ञा विद्यालंकार द्वारा गुरूकुल की वर्तमान स्थिति और भावी योजनाओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि मानवीय सर्वांगीण विकास का माध्यम वेद ही है। बच्चों को वर्तमान शिक्षा जो विद्यालयों के माध्यम से दी जा रही है, वह मनुष्य का पूर्ण विकास नहीं कर सकती, वह भौतिकता प्रधान शिक्षा है। अनेक महत्वपूर्ण बिन्दुओं की शिक्षा का उसमें कोई प्रावधान नहीं है। अपने उद्‌बोधन में कहा गुरूकुल के माध्यम से भी अनेक छात्र–छात्राओं ने पी.एस.सी., आई.पी.एस. की परिक्षाओं में सफलता पाई है और गुरूकुल के अनेक विद्यार्थी अब उच्च प्रशासनिक पदों पर आसीन है। केवल मन्त्रपाठ, भक्तिभाव या व्यक्तिगत धर्म तक ही सीमित नहीं हैं। संस्कृत के अतिरिक्त भी अन्य विषयों की पढ़ाई की व्यवस्था भी यहॉ पर होती है। अन्त में कहा कि आप सबके सहयोग से गुरूकुल की बहुत कुछ अच्छी व्यवस्था हो चुकी है कुछ होना बाकी है। आपका जिस प्रकार अभी सहयोग मिला है, ऐसा ही भविष्य में मिलता रहे, ऐसा आप सबसे निवेदन है।

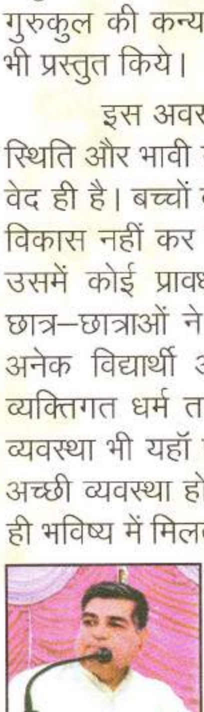

श्री ज्ञानेन्द्र सिंह अवाना

श्री ज्ञानेन्द्र सिंह अवाना, दिल्ली जो एक सेवा निवृत्त प्रशासनिक अधिकारी रहे हैं तथा लम्बे समय से प्रतिदिन एक वेदमन्त्र का सरल हिन्दी, इंग्लिश अनुवाद यूट्यूब पर प्रसारित कर रहे हैं।

आपने अपने उद्‌बोधन में कहा कि मैंने अपने जीवन में 3 विषय में एम.ए, एलएल.बी., कम्प्यूटर, इन्जीनियरिंग, एम.बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की, इसके अतिरिक्त भी प्रशासनिक अधिकारी की दृष्टि से महत्वपूर्ण ट्रेनिंग के लिए

देश–विदेश इस सन्दर्भ में जाना–आना हुआ, किन्तु जब मैंने वेदों की ओर जाकर देखा तो मुझे लगा कि अभी तक जो मैंने इतनी डिग्रियॉं प्राप्त की हैं वे वेदज्ञान के समक्ष शून्य हैं। ऐसे पवित्र उद्देश्य को लेकर यह गुरूकुल की स्थापना हुई है। यहॉं की व्यवस्था और सहयोग को देखते हुए मुझे विश्वास है कि यह गुरूकुल कुछ समय में ही उन्नति के शिखर पर पहुंचेगा। मुझे यहॉं आकर अत्यन्त प्रसन्नता की अनुभूति हुई।

श्री अशोक गुप्ता

श्री अशोकजी गुप्ता, दिल्ली ने अपने संक्षिप्त उद्बोधन में कहा गुरूकुल की व्यवस्था और वातावरण से अत्यन्त संतुष्टि और प्रसन्नता हुई। गुरूकुल के लिए उनके योग्य जो भी सेवा होगी वह भविष्य में सहयोगी बनकर करते रहेगें। यहॉं आने पर आनन्द की अनुभूति हुई और पुनः मैं यहां आते रहूंगा।

न्यायमूर्ति ज्ञानी सा.

मंचस्थ **श्री वीरेन्द्रदत्तजी ज्ञानी** (सेवानिवृत्त न्यायमूर्ति) जो गुरूकुल के संवरक्षक मण्डल के सदस्य भी हैं, उन्होंने अपने विद्वतापूर्ण उद्बोधन में गुरूकुल शिक्षा का महत्व बताते हुए, इस क्षेत्र में इसका खुलना एक उपलब्धि और यहॉं के निवासियों के लिए गौरव की बात बताई। गुरूकुल के माध्यम से ही सनातन संस्कृति का सही ज्ञान प्राप्त हो सकता है। गुरूकुल के माध्यम से ही एक श्रेष्ठ मनुष्य का निर्माण संभव है, इसी से विद्यार्थी चरित्रवान, कुछ ज्ञानवान हो सकता है। इस अवसर पर आपने भविष्य में भी गुरूकुल का सहयोग करने की भावना व्यक्त की।

आचार्या नंदिता चतुर्वेदा

चतुर्वेदा बहन नन्दिता जी शास्त्री ने वर्तमान समय में गुरूकुल की संचालित हो रही व्यवस्था से सन्तोष व्यक्त किया तथा तीनों आचार्याओं सुश्री प्रज्ञा, सुश्री सुचिता, सुश्री राधा की प्रशंसा करते हुए उन्हें योग्य आचार्या बताया, साथ ही आपने आश्वस्त करते हुए बहुत ही भावनात्मक लहजे में गुरूकुल की प्रशंसा की और स्वयं भी यहॉं पर कभी–कभी आकर शिक्षिकाओं और कन्याओं को मार्गदर्शन देने की भावना व्यक्त की। यहॉं से पाणिनी कन्या गुरूकुल महाविद्यालय जिसकी प्रमुख संचालिका वहां भी कुछ आचार्या और प्रमुख बच्चों को बुलाकर योग्य मार्गदर्शन देने का कहा। आपने कहा मुझे विश्वास है कि यह गुरूकुल उन्नति करेगा। विशेषकर इस क्षेत्रिय परिवार के बच्चों को यह स्वर्णिम अवसर प्रदान करेगा। अन्त में मैं अपनी शुभकामना, शुभ आशीर्वाद गुरूकुल परिवार को देते हुए इसके भविष्य की मंगल कामना करती हूँ।

श्री काशीराम अनल

श्री काशीरामजी अनल ने अपने संक्षिप्त उद्बोधन में कहा कि गुरूकुल की हमारी योजना थी किन्तु धन, मार्गदर्शन और प्रेरणा तीनों का अभाव था। ईश्वर की कृपा से वह कमी पूरी हुई और विश्वास ही नहीं हो रहा कि इतना बड़ा निर्माण और यह भवन प्रारंभ हो गया। पूरा क्षेत्र और हमसब इसके लिए दृढ़ संकल्पित हैं। गुरूकुल को तन–मन–धन से सहयोग करेगें और सभा के मार्गदर्शन में जो कार्य हमें दिया जाएगा उसे पूर्ण करेगें।

अन्त में गुरूकुल समिति के मन्त्री श्री प्रकाश आर्य द्वारा उद्बोधन देकर आभार व्यक्त किया। आपने अपने उद्बोधन में कहा कि वर्तमान समय में गुरूकुल शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता और अधिक बढ़ गई है। सनातनधर्मी ही सनतान धर्म की परिभाषा नहीं जानते हैं, सनातन धर्म के मूल से भटक गए हैं। कैसे इसकी रक्षा होगी ? कौन करेगा ? विद्यालय और कॉलेज की शिक्षा से यह संभव है ? यह सिर्फ गुरूकुल शिक्षा पद्धति से ही संभव है। आज सनातन धर्म पर साम्प्रदायिक विचारधारा का चहुंओर से प्रहार हो रहा है। सनातन धर्म की मान्यता को मिटाने के लिए अनेक प्रकार के षड़यन्त्र चल रहे हैं। हिन्दू समाज वैदिक मान्यता से दूर होने के कारण जाति व अनेक कुप्रथा से जकड़ा है, इस कारण समाज में विघटन हो रहा है। धर्म और ईश्वर के नाम पर मनुष्य बंट गया है। इसका एकमात्र कारण है शिक्षा पद्धति और सनातन धर्म के प्रति सही मार्गदर्शन का अभाव।

श्री प्रकाश आर्य

इस गुरूकुल निर्माण में अनेक लोगों ने प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग दिया है। विशेषकर रूपालिया परिवार जिनके द्वारा निःशुल्क भूमि दान दी उसके पश्चात ही यह जो कुछ यहाँ हो रहा है वह संभव हुआ। मुख्य संवरक्षक और अनेक संस्थाओं के सहयोगी हैं। इस गुरूकुल का भी मार्गदर्शन और पूर्ण सहयोग कर रहे हैं। इस अवसर पर श्री वल्लभजी और रामकरणजी का स्वागत किया गया। श्री सुरेशचन्द्रजी आर्य (प्रधान–सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली) श्री इन्द्रप्रकाशजी गॉधी (प्रधान–मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल), श्री दलवीरसिंहजी राघव (पूर्व प्रधान– मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल), श्री राकेश उपाध्याय (उद्योगपति), विजय अग्रवाल भोपाल, वेदप्रकाश शर्मा (से.नि.आई.जी.) ऐसे अनेक महानुभावों का निरन्तर सहयोग व मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। इसके पश्चात विद्वत मण्डल में आचार्या श्रीमती राकेश शर्मा, आचार्य योगेन्द शास्त्री, पं. रामलालजी शास्त्री "विद्याभास्कर", आचार्य चन्द्रमणिजी, श्री राजेन्द्रजी व्यास, उज्जैन का मार्गदर्शन अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा।

छोटी बच्ची ने अष्टाध्याय के सूत्र सुनाकर सबको आश्चर्यचकित कर दिया। गुरुकुल की कन्याओं ने आसन प्राणायाम का सराहनीय आकर्षक प्रदर्शन किया।

इस अवसर पर निरन्तर सहयोगी और अनेक गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे, जिनमें – श्री वेदप्रकाश आर्य, श्री अरुण आर्य, श्री अतुल वर्मा, श्री दक्षदेव गौड़, आचार्य चन्द्रमणिजी, श्री हरिसिंह सरपंच, श्री नारायणसिंह आर्य, श्रीधर शर्मा गुना, श्री अरविन्दजी गुना, श्री शंकरसिंह आर्य, श्री रमेश आर्य, श्री सिद्धनाथ आर्य, श्री दुर्गाप्रसाद आर्य, श्री गोकुल प्रसाद आर्य, श्री चैनसिंह आर्य, श्री प्रतापसिंह आर्य, श्री प्रतापसिंह आर्य, गोलखेड़ानाउ, श्री मोहनलाल आर्य कानड़, श्री गोपाल अग्रवाल ब्यावरा, श्री शान्तिलाल कारपेन्टर, श्री मनोज सोनी इन्दौर, डॉ. रामलाल प्रजापति, श्रीधर गोस्वामी, अश्विनी शर्मा, श्रीमती सुमन ज्ञानी, सुश्री सुनीति शर्मा, सुश्री निधी शर्मा, मोहनलाल आर्य, मुकेश आर्य, सुरेश आर्य आदि जो गुरूकुल के बड़े सहयोगी हैं।

निश्चित ही कार्यक्रम यादगार बन गया – श्रीधर शर्मा, गुना

मुख्य द्वार

नव निर्मित यज्ञशाला

ध्वजारोहण दृश्य

यज्ञोपवीत के अवसर पर यज्ञ करती बालिकाएँ

मंच पर विराजित अतिथिगण

कार्यक्रम स्थल पर उपस्थित जनसमुदाय

यज्ञोपवीत पर उपदेश करती हुई आचार्या नंदिता शास्त्री

उन्हें इस प्रकार नष्ट कर रहे हैं। जहॉ सहस्त्रों व्यक्ति रात को भूखे पेट सोते हैं, वहां भोज समारोह में अन्न का दुरूपयोग करना पाप कामना है।

गुरूकुल, गोशाला, अनाथालय आदि के लिए कृषक लोग अपना धर्म समझकर अन्नादि का दान करते हैं, ऐसे व्यक्ति पुण्य के भागी होते हैं। ऐसे सज्जनों द्वारा दिये गये दान से विद्यार्थी विद्या प्राप्त करके अपना जीवन तो सफल करते ही हैं, पढ़ने के पश्चात भी देश सेवा हेतु अपना जीवन लगा देते हैं। अतः दानी द्वारा उचित स्थान पर दिया गया दान उत्तम फलदायक सिद्ध होता है। जो व्यक्ति निठल्ला रहकर धर्म नहीं करता, परन्तु धर्म के नाम पर दान लेकर उसका शराब, आदि नशे में दुरूपयोग करता है, ऐसे व्यक्ति को दिया गया दान भी दानी को अधोगति को प्राप्त कराता है, अतः दान भी समझ कर दिया जाना चाहिए।

तैत्तिरीयोपनिषद् में लिखा है –

श्रद्धया देयम्। अश्रद्धया देवम्, श्रिया दयम्। हिया देयम्। संविदा देयम्।

सत्कर्म हेतु दान अवश्य देना चाहिए। चाहे श्रद्धा से दे, अश्रद्धा से दें, शोभा के लिए दे, किसी के द्वारा लज्जित किये जाने पर दें, और प्रतिज्ञा करके भी देना चाहिए। भाव यह है कि कोई भी अवस्था ही दान अवश्य देना चाहिए। कुछ व्यक्ति सामर्थ्य न होने पर ऋण लेकर भी दान करते हैं। अतः अपने और सचमुच की उचित आवश्यकता वाले लोगों के कल्याण के लिए दान अवश्य करना चाहिए।

– साभार सुधारक

दिया हुआ दान अर्जित धन को उसी प्रकार पवित्र करता है जैसे मटमैले पानी में थोड़ा सा फिटकरी का टुकड़ा डाल देने से पानी स्वच्छ हो जाता है। योगीराज श्रीकृष्णचन्द्रजी ने भी इसका महत्व बताते हुए कहा –

"यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानी मनुष्याणाम्।"

यज्ञ, दान और तप से मनुष्य जीवन पवित्र होता है।

बोधकथा

सकारात्मक दृष्टिकोण से देखो

"व्यक्ति को नकारात्मक नहीं सकारात्मक सोचना चाहिए, क्योंकि नकारात्मक सोच नकामयाबी की ओर, नाकामयाबी निराशा की ओर तथा निराशा का परिणाम मूर्खता होता है।"
— लेखक

एक कस्बे में एक धनवान सेठ रहा करते थे। उनके दो नन्हें पुत्र थे। एक दिन उस सेठ ने अपने एक खास नौकर को बुलाकर कहा — तुम मेरे दोनों बेटों को गरीब बस्ती में ले जाओ, ताकि मेरे लाड़ले यह देख सके कि गरीबी क्या चीज होती है।

वह नौकर सेठ के दोनों बेटों को गरीब बस्ती में ले गया और वहां सारा दिन बिताने के बाद वापस घर ले आया।

दूसरे दिन उस सेठ ने अपने दोनों बेटों को पास बुलाया और पहले पुत्र से पूछा — बेटा कैसा लगा, उस गरीब बस्ती में समय बिताकर।

पहले लड़के ने जवाब दिया — पिता जी ! गरीबी भयानक होती है। उनके घरों में ना गार्डन है, न तो अच्छा कुत्ता है, उनके घर में स्वीमिंग पुल भी नहीं है। हम लोग वहां होते तो भूख और कष्ट से मर जाते। मैं तो वहां दुबारा नहीं जा सकता।

फिर उस सेठ ने अपने दूसरे बेटे से वही प्रश्न पूछा। तो दूसरे ने कहा — पिताजी, ऐसा जीवन दिखाने के लिए मैं आपका धन्यवाद करता हूं। हम लोगों के पास केवल एक ही कुत्ता है, जबकि उनके पास कई हैं। हमारे घर में तो एक छोटा सा स्वीमिंग पुल ही है, जबकि उनके घर के पीछे तो पूरी नदी बहती है। हमारे घर के अन्दर छोटा सा गार्डन ही है, जबकि उनका घर प्राकृतिक गार्डन अर्थात जंगल के बीच में स्वर्ग प्रतीत होता है। वाकई पिताजी, उन लोगों को प्रकृति की अपार सम्पदा मिली है, उस जीवन का अपना ही मजा है। वहां कोई बन्धन नहीं है।

तो क्या तुम्हें अपना घर, रहन–सहन पसन्द नहीं ? ऐसा नहीं पिताजी, यह बन्धनमुक्त जीवन स्नेह से लबालब है। इसमें अलग ही आनन्द है। इस कहानी से सीख मिलती है कि, हमें नकारात्मक नहीं सकारात्मक दृष्टि से देखना चाहिए। एक ही चीज को देखने के अलग–अलग तरीके हो सकते हैं, परन्तु हमें हमेशा स्वस्थ और अच्छी दृष्टि से देखना चाहिए।

एक बार सुकरात से एक निराशावादी व्यक्ति मिला और बोला — मैं जिन्दगी से ऊब गया हूं, आत्म हत्या करने का मन करता है। सुकरात का उत्तर था — तेरा मर जाना ही उत्तम है, तू जितनी जल्दी मरे, उतना सबके लिए, तेरे लिए अच्छा होगा, अन्यथा तेरी इस विचारधारा से समाज को बड़ी क्षति होगी।

एक विचार — निराशावादी दृष्टिकोण आपके पुरुषार्थ और उत्साह को कमजोर करता है। आशावादी सकारात्मक दृष्टिकोण आपकी कार्यक्षमता और उत्साह की वृद्धि करता है। गुरूदेव दयानन्द का जीवन हमारे लिए एक ऐसी ही प्रेरणा देता है, जिसमें प्रतिकूल परिस्थितियों को भी अनुकूल बना दिया। एक शायर ने लिखा — **"आदमी वो नहीं जिसे गर्दिशें हैरान कर दें, आदमी वह है जो गर्दिशें विरान कर दे।**
— सम्पादक

वेदों की दृष्टि में धर्म का स्वरूप

हमने ''धर्म'' और 'संस्कृति' शब्दों के मूल अर्थ को नष्ट कर दिया है। हमने सब मतों, मजहबों, सम्प्रदायों, पन्थों, मान्यताओं या दृष्टिकोणों को धर्म मानना शुरू कर दिया है। जबकि धर्म तो केवल कोई एक ही हो सकता है और वह भी वही हो सकता है जो सभी को स्वीकार करने योग्य हो, इसलिए वेद में कहा गया है –

सा प्रथमा संस्कृतिः विश्ववारा। (यजुर्वेद 7/14)

वह प्रथम संस्कृति ही विश्व के समस्त मानवों के लिए वरणीय है।

तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। (ऋग्वेद 10/90/16)

धर्म के वे अंग–सत्य, संयम, सदाचार, न्याय, दया, क्षमा, परोपकार व अहिंसा आदि शाखा–प्रशाखा के रूप में सर्वप्रथम वेदों में ही वर्णित हैं। संस्कृत साहित्य में विलोम शब्द के रूप में दो शब्दों की जोड़ी सुप्रसिद्ध है – नूतन व पुरातन। कोई मत या मजहब किसी अन्य मत या मजहब की अपेक्षा नूतन होता है तो कोई पुरातन। वैदिक धर्म सनातन है।

किन्तु सृष्टि के प्रारम्भ से निरन्तर प्रवाहित होती आ रही वैदिक धर्म की यह अजस्त्र धारा गंगा की तरह गंगोत्री से निकलकर आज तक सर्वजनहिताय तथा सर्वजनसुखाय है। यह वैदिक धर्म सार्वजनीन, सार्वकालिक, सार्वभौमिक एवं अजातशत्रु है जो निर्विकार एवं निर्दोष होने के कारण समस्त विश्व का सर्वथा शोधन करता है। यही धर्म विश्ववरणीया संस्कृति भी कहलाती है। जब धर्म वैदिक न रहकर अन्य किसी मतपरक विशेषणों से जुड़ने लगता है तो उस समय मौलिक धर्म की उत्कृष्टता अपने आप समाप्त होने लगती है तथा वह तथाकथित धर्म, संकीर्ण, भाव वाला होकर अपने अनुयायियों को सच्ची मानवता से दूर भी करता है।

धर्म निरपेक्षता की अनर्गल व्याख्या ने ही कुकुरमुत्तों की तरह जगह जगह पर उग आए आधुनिक समस्त मत–सम्प्रदायों, पन्थों एवं मजहबों को उदारता एवं समझौतावाद के कारण धर्म और संस्कृति का जामा पहना दिया है। जिसका परिणाम वर्तमान में हम देख रहे हैं–सर्वत्र धार्मिक विद्वेष, साम्प्रदायिक कट्टरता, मजहबी उग्रवाद, अधिक स्वायत्तता की मांगें व युद्ध विभीषिका। इस प्रकार का तथाकथित धर्म स्वयं को उत्कृष्ट एवं अन्य को गर्हित, हेय व अधम मानता है। ऐसी बात नहीं है कि वैदिक धर्म से पृथक अपनी सत्ता रखने वाले अन्य मतों व मजहबों में कोई अच्छी बात है ही नहीं अपितु इन सभी मतों में जो करूणा, ममता, उदारता, सहानुभूति, सदाचार, अहिंसा आदि गुण हैं वे प्रशंसनीय हैं। समाजों व राष्ट्रों में देश, काल तथा व्यक्ति की प्रवृत्ति के अनुसार खान–पान, रहन–सहन, लोकाचार व पूजा–पद्धतियों में भिन्नता

होना स्वाभाविक है, परन्तु उन से धर्म की भिन्नता कदापि नहीं हो सकती।

धर्म सब का एक ही होता है। अध्यात्म से ओत – प्रोत जीवन सत्य, धैर्य, क्षमा, इन्द्रिय–नियन्त्रण, स्वाध्याय, दानकर्ता, परमार्थ, यज्ञमयता, उदारता, पक्षपातहीन, न्याय, अप्रमाद, कर्तव्यपरायणता, उदात्तता, तपस्या, साधना, सन्तोष, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह आदि गुण धर्म के वे शाश्वत अंग हैं जो इन्सान को दानवता से बचाते हुए मानव बनाए रखते हैं। इन्हीं धार्मिक गुणों से एक स्वस्थ समाज व विशाल राष्ट्र की स्थापना हो पाती है।

वैदिक ऋचाएं धर्म को ध्रुव विशेषण से जोड़कर उस की अक्षरता को दर्शाते हुए निश्चित सिद्धान्तों व आचरण के नियमों की ओर संकेत करती हैं –

मित्रावरूणौ त्वोत्तरतः परिधत्तां ध्रुवेण धर्मणा विश्वस्यारिष्टयै।

(यजु. 2/3)

वस्तुतः धर्म एवं संस्कृति आदिकाल से चले आ रहे वे शाश्वत मानवीय कर्तव्य हैं जो अनिवार्य रूप से पालन किये जाते हैं। इस धरा के महर्षियों की अमरवाणी केवल इसी लोककल्याण कारिणी धर्म–ध्वनि का ही उच्चारण करती रही है – **धर्मादर्थश्च कामश्च** अर्थ और काम की प्राप्ति धर्मपूर्वक ही करनी चाहिए।

उपनिषद् के ऋषि ने भी धर्म की सार्थकता को लोकोन्नति में ही देखा है। उसने कहा – **त्रयो धर्मस्कन्धाः यज्ञो अध्ययनं दानम्।** (छान्दोग्य उपनिषद् 2/23/1) यज्ञ, अध्ययन एवं दान के माध्यम से उस ने धर्म का व्याख्यान करने का प्रयास किया है। यज्ञ धर्म का पहला अंग है।

सभी श्रेष्ठ कर्म यज्ञ कहलाते हैं अतः कोई भी अच्छा कार्य करने वाला व्यक्ति सच्चा धार्मिक होता है। अध्ययन जीवन को उत्थान की ओर ले जाता है। इसलिए स्वाध्यायप्रेमी व्यक्ति भी धर्म का पालन माना गया है। दान धर्म का वह पड़ाव है जिस से व्यक्ति मानवता से देवत्व की ओर कदम रखता है।

– **डॉ. विक्रम कुमार विवेकी**

आकूतिः सत्या मनसो मे अस्तु। अथर्व. 5.3.4
मेरे मन के संकल्प सत्य सिद्ध हों।

एनो मा नि गां कतमच्चनाहम्। अथर्व. 5.3.4
मैं किसी भी पाप में ना फँसूं।

महर्षि दयानन्द आर्ष कन्या गुरुकुल मोहन बड़ोदिया

परमात्मा की महती कृपा से और अनेक धर्मप्रेमी दानदाता, सहयोगियों के प्रयास से गुरूकुल की स्थापना 15 सितम्बर 2019 को हो गई। शीघ्रता में छात्राओं की पढ़ाई को ध्यान में रखते हुए प्रारंभ किया, उस समय कुछ व्यवस्था हो चुकी थी, कुछ होना शेष थी। किन्तु जितनी आवश्यकता थी वह उपलब्ध हो चुकी थी।

18 छात्राओं का प्रथम सत्र में प्रवेश हुआ, एक आचार्या और म. प्र. शिक्षा बोर्ड के अनुसार की पढ़ाई में सहयोगी अध्यापिकाओं द्वारा कार्य प्रारंभ हुआ। छात्राओं ने बहुत कम समय में वह कर दिखाया जिसकी कल्पना नहीं थी। संध्या, यज्ञ, भजन, व्यायाम, संस्कृत श्लोक, मन्त्र एवं अष्टाध्यायी के सूत्र का प्रदर्शन गुरूकुल स्थापना की सार्थकता को दर्शाता है। कई स्थानों पर जहाँ कन्याओं का प्रदर्शन हुआ, वहाँ हजारों रूपया पारितोषिक के रूप में श्रोताओं ने दिया। समय–समय पर गुरूकुल के द्वारा आस पास के ग्रामीण व शहरी क्षेत्र में वैदिक धर्म प्रचार व यज्ञ–भजन हेतु कन्यायें व आचार्या गुरूकुल वाहन से भी जाती हैं।

सत्र प्रारंभ होने के समय से ही अभी तक निर्माण कार्य चल रहा है। प्रतिदिन ध्वनि प्रसारण यन्त्र (माईक) द्वारा सुबह–शाम सन्ध्या यह होता है। दूर–दूर तक प्रतिदिन उसको सुनकर हजारों व्यक्ति आनन्द की अनुभूति कर रहे हैं। गुरूकुल आगर सारंगपुर हाईवे पर ही गुरूकुल भूमि है। वहाँ से हजारों व्यक्ति निकलते हैं। वह गुरूकुल के सामने सिर झुकाकर निकलते हैं। आसपास के क्षेत्र में गुरूकुल के प्रति अच्छी आस्था व श्रद्धाभाव है।

गुरूकुल के प्रति जन सामान्य का लगाव बढ़ते जा रहा है। कोरोना लॉक डाउन को देखते हुए इस सत्र का संचालन कठिन लग रहा था। किन्तु इसके उपरान्त भी इस सत्र में जो संख्या रखने का लक्ष्य था वह तो

पूर्ण हो ही गया इसके अतिरिक्त और अभी भी प्रतिक्षा सूची में कुछ नाम हैं जिन्हें आगामी सत्र में प्रवेश दिया जावेगा।

गुरूकुल निर्माण कार्य धनाभाव में भी रूका नहीं, निरन्त चल रहा है। इसमें एक बड़ा भव्य प्रवेश द्वार, सामन बाउण्ड्रीवॉल, गौशाला, यज्ञशाला, कार्यालय कक्ष, दो बड़े अतिथि कक्ष, तीन आचार्या कक्ष, भोजनालय आदि का निर्माण हो गया, कुछ बाकी है।

गुरूकुल में दानदाता, मुक्त हस्त से दान देते रहते हैं, प्रत्येक कक्ष के पंखे, फ्रीज, कूलर, आटा चक्की, स्थान–स्थान पर 16 सी.सी.टी.वी. केमरे, पलंग आदि भी दानदाताओं के प्रयासों से व्यवस्था हुई। अभी और भी निर्माण कार्य की आवश्यकता है, गुरूकुल के पास की भूमि क्रय करने की भी योजना है। इसमें से कुछ भाग में वानप्रस्थ आश्रम के लिए विचार किया है।

सद्‌गुणों की महत्ता

गुणैरूत्तमतां यान्ति नोच्चैरासन संस्थितैः।

प्रसाद शिखरस्थोपि काकः किं गरूड़ायते।। चाणक्य नीति

अर्थात् : गुणों से ही मानव महान होता है, न कि ऊँचे आसन पर बैठने से। महल के ऊँचे शिखर पर बैठने से कौआ गरूड़ नहीं हो सकता।

अद्यैव कुरू यच्छ्रेयो मा त्वां कालोऽत्यगादयम्।

न हि प्रतीक्षते मृत्युः कृतमस्य न वा कृतम्।।

महाभारत शांतिपर्व 164–14

भावार्थ : जो उत्तम कार्य करना हो, वह आज ही कर डालो कहीं ऐसा न हो कि काल तुम्हें निगल जाय। मृत्यु इस बात की प्रतिक्षा नहीं करती कि तुमने कोई कार्य पूरा किया है या नहीं।

प्रांतीय सभा से प्रचार हेतु पुस्तकें व स्टीकर प्राप्त करें

वेद परमात्मा का दिया हुआ सृष्टि का प्रथम पवित्र ज्ञान है, जो पूर्ण है सबके लिए है, सदा के लिए है, वही सनातन और धर्म का आधार है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

ईश्वर को मानने से पहले उसे जानना आवश्यक है, ईश्वर वही है जो-सच्चिदानन्दस्वरूप निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य,पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

एक सफल, सुखी, श्रेष्ठ जीवन के लिए मात्र भौतिक सम्पदा धन, सम्पत्ति, मकान ही पर्याप्त नहीं है, आत्मिक सम्पदा, जो आत्मा, मन और बुद्धि की पवित्रता व विकास से प्राप्त होती है, वह भी आवश्यक है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिए। अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना ■ पढ़ाना और सुनना■सुनाना सब आर्यों (श्रेष्ठ मानवों) का परम धर्म है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य

...हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थ से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे भी होगा, उसकी उन्नति तन-मन-धन से सब जने मिल के प्रीति से करें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥

सम्प्रदायों, मजहबों की स्थापना का आधार विभिन्न मानवीय विचार धाराएं हैं, इसलिए वे अनेक हैं। किन्तु धर्म उस एक परमात्मा का ज्ञान है, इसलिए सब मनुष्यों का धर्म भी एक है, वही सबको संगठित करता है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

ईश्वर एक है, उसके गुण-कर्म और स्वभाव अनेक है, इसलिए हम उसे अनेक नामों से पुकारते है। किन्तु उसका मुख्य नाम ओ३म् है, उसी का स्मरण करना चाहिए।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

स्तुति, प्रार्थना, उपासना, पूजा हमारा व्यक्तिगत धर्म है, किन्तु पूर्ण धर्म पालन तो व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और विश्व धर्म के पालन से होता है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

आर्य समाज

मानव कल्याणार्थ

आर्य समाज के दस नियम

1. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।
6. संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सब से प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

एम.पी.एच.आई.एन. 2003 12367

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2018-20

अवितरित रहने पर कृपया निम्न पते पर लौटायें

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा

तात्या टोपे नगर, भोपाल-462003(म.प्र.)

मुद्रक, प्रकाशक - इन्द्र प्रकाश गांधी द्वारा कौशल प्रिंटर्स, भोपाल से मुद्रित कराकर
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय, तात्या टोपे नगर, भोपाल से प्रकाशित। संपादक - प्रकाश आर्य, महू

AMIT CHATURVEDI # 98262-71042